**ओ३म्**

**-आर्ष गुरुकुल पौंधा-देहरादून में वेद वेदांग सम्मेलन का आयोजन-**

**“हमें भाषा परम्परा से मिली है। सृष्टि की आदि में ईश्वर ने ऋषियों**

**को भाषा प्रदान की थीः आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

देहरादून के आर्ष गुरुकुल पौंधा-देहरादून के 18वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 2 जून, 2017 को आयोजित वेद-वेदांग सम्मेलन में आर्यजगत के विख्यात विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि आर्यसमाज ने अपनी स्थापना से अब तक वेदों का व्यापक प्रचार प्रसार किया है और अनेक प्रकार से वेदों को लोगों तक पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि लोगों की वेदों के प्रति धारणा बदल चुकी है। स्वामी विवेकानन्द ने उपनिषदों को ही वेद कहा था। वेदों के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान न होने के कारण अनेक आचार्य ऐसा मानते थे। आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज जो वेद संहितायें प्रकाशित करता है उसी को अब सभी विद्वानों द्वारा वेद माना जाता है। वेद में ज्ञान-विज्ञान हैं। पहले सनातन धर्मी आर्यसमाज की मान्यताओं की हंसी उड़ाते थे परन्तु आज वह वेदों में विज्ञान को स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के दो पक्ष हैं एक आन्तरिक पक्ष और दूसरा बाह्य पक्ष। आन्तरिक पक्ष तक ही अब हमारा कार्य सीमित हो गया है। बाह्य पक्ष की चर्चा कर उन्होंने कहा कि हम वेदों को विद्या व ज्ञान का मूल मानते हैं। एक वेद ही ऋषि दयानन्द के सामने था। वह अपनी वैदिक मान्यताओं के प्रचार व प्रसार करने में सफल रहे। सनातन धर्मी भी अब वेद सम्मेलन करते हैं परन्तु वह वेद से बंधे हुए नहीं है। वह रामायण, गीता और पुराणों से बंधे हुए हैं। उन्हें वेद और आर्यसमाज में लाने का हमारा प्रयास नहीं हो रहा है। आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज को सर्व धर्म सम्मेलन करने चाहिये और वेद को मनवाना चाहिये। उन्होंने कहा कि सभी मतों के भाईयों को आर्यसमाज में बुलाईये। उन्हें सम्मान दें। उन्हें समझाईये और मनायंे। उन्हें वैदिक धर्मी बनाये।

 डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि महर्षि दयानन्द का वेद भाष्य उत्कृष्ट भाष्य है। इस भाष्य ने दूसरे भाष्यों को पराभूत कर दिया। विश्व विद्यालय के आचार्य आज भी सायण के वेदभाष्य को प्रमाणिक मानते हैं। ऋषि दयानन्द ने सायण भाष्य की समालोचन करते हुए बताया है कि आचार्य सायण कहीं कहीं छन्दों को समझने में गलती करते हैं। व्याकरण में अशुद्धि करना सायण की बहुत बड़ी भूल है। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द का वेद भाष्य महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में प्रतिष्ठित होना चाहिये। स्वामी दयानन्द के भाष्य को उन्होंने बोधगम्य बनाने को कहा। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि का वेदभाष्य सुपाठ्य नहीं है। उन्होंने कहा कि उनके भाष्य पर शोध होना चाहिये। विद्वान वक्ता ने आगे कहा कि ऋषि दयानन्द जी का वेदभाष्य विश्वविद्यालयों में स्वीकार्य होना चाहिये। आचार्य जी ने बताया कि जब श्री मनमोहन सिंह प्रधान मंत्री थे उन्होंने गुरुग्रन्थ साहब पर शोध के लिए सरकारी कोष से करोड़ों रूपये दिये। उन्होंने कहा कि श्री चरण सिंह प्रधानमंत्री रहे। वह ऋषि भक्त थे परन्तु उन्होंने वेद के लिए कुछ नहीं किया। हमारे नेताओं को दृणतापूर्वक आर्यसमाज का काम करना चाहिये। आचार्य रघुवीर जी ने हिमाचल प्रदेश के ऋषि भक्त राज्यपाल श्री देवव्रत जी की चर्चा की और कहा कि उन्हें संस्कृत को राजभाषा बना देना चाहिये। आचार्य रघुवीर जी ने कहा कि सभी कहते हैं कि वेद का पढ़ना पढ़ाना व सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है परन्तु इस धर्म को सब निभाते नहीं है। आचार्य जी ने श्रोताओं को कहा कि तुम बस सुनते ही सुनते हो। इससे काम नहीं चलेगा। दूसरों को वेद पढ़ाईये। उन्होंने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी से सुनी एक सत्य कथा सुनाई कि श्रीनगर, कश्मीर में एक मुस्लिम परिवार ने अपनी बहुत कम उम्र की भूखी लड़की को तब तक भोजन नहीं दिया जब तक कि उसने कुरान का पाठ नहीं कर लिया। यहां तक हुआ था कि मासूम लड़की बेहोश हो गई थी और आनन्द बोध जी ने उसे पानी की छींटे देकर होश दिलाई थी। तब भी उसको भोजन से पहले जैसा भी वह कुरान का पाठ कर सकती थी, करने के बाद ही भोजन दिया गया था। आचार्य जी ने श्रोताओं से पूछा कि क्या आप अपने बच्चों को एक दिन में एक वेदमंत्र का पाठ नहीं पढ़ा सकते? उन्होंने कहा कि यदि आप प्रचार नहीं करंेगे तो काम आगे नहीं बढ़ेगा। आचार्य जी ने कहा कि स्कूलों में हमारे बच्चे धर्म विषयक विचारों से दूर हैं। वेदों को घरों में रखने की उन्होंने सलाह दी। अपने बच्चों को यज्ञ में बैठाईये। वेद के अर्थों को स्वयं पढ़े व उन्हें पढ़ायें। इससे वेदों की रक्षा होगी व उनका प्रचार प्रसार होगा। वेद परम्परा बचेगी। बच्चों का जीवन सुरक्षित होगा। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूल व अन्य कहीं से कोई संस्कार नहीं मिल रहे हैं। इसलिए वेदों का प्रचार करें और अपने बच्चों को घर में ही वेद की शिक्षा दें। इसी के साथ डा. रघुवीर वेदालंकार जी का व्याख्यान समाप्त हो गया।

वेद-वेदांग सम्मेलन में बोलते हुए आर्य विद्वान पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि सूर्य की कान्ति चन्द्र में जाकर चन्द्रमा को प्रकाशित करती है। चन्द्र जब उस प्रकाश को पृथिवी को देता है तब वह सूर्य की कान्ति धवल बन जाती है। चन्द्रमा का प्रकाश लोगों के मनों को शान्त करता है। गुरुकुल के आचार्य को पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने अग्नि की उपमा दी और कहा कि गुरुकुल पौंधा के संस्थापक आचार्य हरिदेव जी से आचार्य धनंजय और आचार्य रवीन्द्र प्रकाशित हुए हैं। श्रोत्रिय जी ने आगे कहा कि उनमें जो विद्या है वह उनके आचार्यों की देन है। आचार्य श्रोत्रिय जी ने कहा कि यदि आपको हंस रूपी आकाशीय पिण्ड का रूप देखना हो तो चन्द्रमा को देखो। आचार्य जी ने आगे कहा कि यदि मेरे माता-पिता मेरे सामने न बोलते होते तो हम बोल नहीं सकते थे। जन्म से बहरा मनुष्य बोल नहीं सकता। कान ठीक हों, उन पर ध्वनि पड़ती हो तब उसे सुनकर बच्चा अपने ज्ञान व प्रयत्न का प्रयोग कर जानना आरम्भ करता है। आचार्य जी ने कहा कि हमें भाषा परम्परा से मिली है। श्रोत्रिय जी ने कहा सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि हुई। उस समय भाषा व ज्ञान देने की परम्परा नहीं थी। ज्ञान व भाषा की परम्परा सृष्टि की आदि में ऋषियों से आरम्भ होती है जिसे ईश्वर आरम्भ कराता है।

 आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि सृष्टि के आदि काल में भाषा की परम्परा नहीं थी। यह कैसे उत्पन्न हुई? उन्होंने कहा कि चेतन जीव की सत्ता अनादि है। आदि सृष्टि में जो स्त्री पुरुष उत्पन्न हुए थे, उन्होंने पूर्व सृष्टि में प्रलय से पूर्व अपनी मृत्यु तक जो कर्म किये थे, उन जीवात्माओं में ऐसी कुछ आत्मायें थी, जो पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर ऋषियों के समान थे। मनुष्य जब मरता है तो उसके संस्कार वा कर्मों की पूंजी साथ जाती है। ऐसे कुछ ऋषि प्रलय के समाप्त होने व सृष्टि के उत्पन्न होने पर जन्म लेने की प्रतीक्षा में थे। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने जो अमैथुनी सृष्टि की उसमें वह ऋषि तुल्य जीवात्मायें एवं इतर साधारण जीवात्माओं का जन्म हुआ। सृष्टि के आरम्भ में जो ऋषि उत्पन्न हुए वह पूर्व जन्मों में साधना किये हुए थे। सृष्टि के आरम्भ में उन ऋषि आत्माओं ने जन्म लिया। उन ऋषियों के पास पूर्व जन्म के संस्कार सहित वेद विद्या मौजूद थी। आरम्भ में वह ऋषि बोल नहीं पा रहे थे। आचार्य श्रोत्रिय जी ने गायक, गीत, राग व स्वर आदि की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हारमोनियम को जैसा गायक चाहता है वह वैसा ही बजता है। इसीलिये इसका नाम बाजा है। आचार्य जी ने वेद आविर्भाव का अलंकारिक भाषा में प्रभावपूर्ण वर्णन किया। उन्होंने कहा कि वेद ब्रह्म की वाणी है। वेद वाणी ब्रह्म में ही रहती है। यह उसी से निकलती है और उसी में मिल जाती है। आचार्य जी ने वेद संहिता को संहिता क्यों कहते हैं इसकी भी चर्चा की और प्रकाश डाला। आचार्य जी ने मृत प्राण और अमृत प्राणों की चर्चा भी की। उन्होंने बतया कि वेदों में संहिता का नाम विद्युत है। ज्ञान की अपेक्षा से वेद हैं। विषयों की दृष्टि से वेद चार हैं। ज्ञान अनन्त है इसलिए वेद भी अनन्त हैं। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि ऋषियों ने एक भी अक्षर लिखा है तो वह हमारे ऊपर उपकार करने के लिए लिखा है। आचार्य जी ने श्रोताओं को कहा कि गुरुकुल पौंधा एक वृक्ष है जहां लोग विद्या का अमृत पान करेंगे कर रहे हैं। अब यह तीर्थ बन गया है। स्वामी प्रणवानन्द जी का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि स्वामी जी अपने शिष्यों के बारे में विचार करते हुए यह कहते हैं कि मैं मरूंगा नहीं, परमात्मा ने उन्हें जो शिष्य दिए हैं, उनके कार्यों के द्वारा वह जीवित रहेंगे।

 सम्मेलन में उत्तराखण्ड राज्य के पूर्व खेल मंत्री एवं गुरुकुल के सहयोगी श्री नारायण सिंह राणा भी उपस्थिति थे। उन्होंने भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में भारत विश्वगुरु था। इसके साथ ही हमारा प्राचीन भारत विश्वविद्यालयों सहित ऋषियों व मुनियों से भी युक्त था। उन्होंने कहा कि विदेशी विधर्मी आक्रान्तओं ने हम पर हमला किया। उन दिनों देश के राजा असंगठित थे। विदेशों से आये पांच हजार विधर्मी आक्रमकों ने हमारे देश पर कब्जा कर लिया और हमारे धर्म व संस्कृति को हानि पहुंचाई। हमारे मन्दिर तोड़े गये। हमारी माताओं व बहिनों को अपमानित किया गया। विद्वान वक्ता ने पृथिवीराज चौहान, महाराणा प्रताप और गुरु गोविन्दसिंह जी को भी आदरपूर्वक स्मरण किया और कहा कि इन्होंने मुस्लिम आक्रान्ताओं का मुकाबला किया। श्री राणा ने अंग्रेजों के भारत में पदार्पण का भी वर्णन किया। उन्होंने लार्ड मैंकाले की चर्चा कर बताया कि उसने हमारी पूर्व की शिक्षा प्रणाली को नष्ट कर अंग्रेजी शिक्षा को प्रवर्तित किया और देशवासियों को उनका भक्त बनाया। उन्होंने चीन, रूस आदि देशों की उन्नति की चर्चा करते हुए बताया कि यह देश अंग्रेजी को पसन्द नहीं करते। उन्होंने यह भी कहा कि गुरुकुल के बच्चों को अंग्रेजी आनी चाहिये जिससे वह दूसरे देशों में जाकर वेदों का प्रचार प्रसार कर सकें।

वेद-वेदांग सम्मेलन की अध्यक्षता गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के स्नातक और प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य भीमसेन वेदवागीश के सुपुत्र श्री देवेन्द्र आर्य ने की। उन्होंने कहा कि वेद पढ़ने से सभी पदार्थों की उपलब्धि होती है। श्री देवेन्द्र आर्य ने वेदों के प्रसिद्ध मंत्र **‘स्तुता मया वरदा वेद माता प्रयोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्’** का पाठ किया और कहा कि यदि बुरे से बुरे काम करने वाला मनुष्य किसी एक वेद मंत्र का भी अर्थ सहित पाठ करता है तो उसका जीवन सुधर सकता है। विद्वान अध्यक्ष ने कहा कि वेदों का अध्ययन करने से आयु, प्राण, प्रजा, कीर्ति और ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति होती है। वेद द्वारा बताये गये मार्ग के अतिरिक्त संसार में जीवन को श्रेष्ठ बनाने का अन्य कोई रास्ता है ही नहीं। श्री देवेन्द्र आर्य ने कहा कि हमारे छात्र संस्कारहीन हो रहे हैं। अपने युवाओं को संस्कारवान बनाने के लिए हमें गुरुकुलों की परम्परा को बढ़ाना होगा। उन्होंने श्रोताओं को संसार को वेदमय बनाने का संकल्प लेने को कहा।

वेद-वेदांग सम्मेलन के आरम्भ में गुरुकुल के ब्रह्मचारी श्री सुखदेव जी ने दो भजन प्रस्तुत किये। एक भजन के बोल थे **‘तेरी चाहना की चाहना है’।** वेद-वेदांग सम्मेलन की रूपरेखा आचार्य धनंजय जी ने प्रस्तुत की थी। उन्होंने कहा कि दुःखों को दूर करने का साधन है वेद व उसका ज्ञान। धनंजय जी ने नास्तिक शब्द की भी विवेचना की। उन्होंने कहा कि नास्तिक वेद की निन्दा करने वाले व उसके विपरीत आचरण करने वाले होते हैं। जिन मनुष्यों को सत्य व असत्य का विवेक नहीं होता वह भी नास्तिक होते हैं। कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल पौंधा के पूर्व स्नातक डा. रवीन्द्र आर्य ने किया। वेद-वेदांग सम्मेलन में मंचस्थ विद्वानों में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती सहित डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डा. रघुवीर वेदांलकार, डा. सोमदेव शास्त्री, डा. वेदव्रत आलोक, श्री इन्द्रजित देव, पं. सत्यपाल पथिक आदि थे। सम्मेलन में बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित थे जो देश के अनेक प्रदेशों व स्थानों से आयोजन में पधारे थे।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून में गोरक्षा सम्मेलन-**

**‘गोमाता का दूध छोड़ कर भैंस मौसी का दूध पीने वाले**

**गोरक्षा नहीं कर पायेंगे: आचार्य इन्द्रजित् देव’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून में 2 जून, 2017 को सायंकालीन सत्र में गोरक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व सामवेद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के बाद सम्मेलन के आरम्भ में आचार्य डा. धनंजय जी ने गोरक्षा सम्मेलन की भूमिका प्रस्तुत की। आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द का उल्लेख कर कहा कि अपने वेदभाष्य में उन्होंने किसानों को राजाओं का भी राजा घोषित किया है। अतीत व भविष्य की कृषि का आधार उन्होंने गाय व उसकी सन्तति को बताया। आचार्य धनंजय ने उत्तराखण्ड राज्य में कुछ वर्ष पूर्व आई आपदा वा त्रासदी की चर्चा की जिसमें गोवंश की हत्या व उनका उत्पीड़न भी एक कारण था। पर्यावरण का उललेख कर उन्होंने कहा कि हम यज्ञ का प्रचार व उसका रक्षण भी नहीं कर पा रहे हैं। हमारी प्रकृति में प्रदूषण व खनन व औद्योगिकीकरण से विकृतियां दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है जिससे मनुष्य जाति की रक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया है। विज्ञान दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है और साथ हि आम आदमी की समस्यायें कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। निर्धन लोगों को विज्ञान की उन्नति का लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि गो की रक्षा, वेदवाणी की रक्षा और पर्यावरण संरक्षण हमारा उत्तरदायित्व है। इस पर हमें ध्यान देना है। इसके बाद श्री नरेन्द्र एवं ब्रह्मचारी मुकेश के भजन हुए।

 गोरक्षा सम्मेलन में प्रथम वक्ता के रूप में बोलते हुए आर्य विद्वान पं. इन्द्रजित् देव जी ने कहा कि मेरठ के पं. लतूर सिंह जी आर्य जगत् के एक अच्छे भजनोपदेशक थे। वह पहलवान भी थे और कुश्ती का भी उन्हें शौक था। सन् 1947 में वह उत्तराखण्ड की मुस्लिम रियासत रामपुर में प्रचार कर रहे थे। एक कार्यक्रम में वह गोरक्षा पर बोल रहे थे। उन्होंने श्रोताओं को गोरक्षा के लाभ बताये। कार्यक्रम में रामपुर के निजाम का एक पहलवान उपस्थित था। वह बोला कि वह पहलवानी करता है और नये बछड़े का मांस खाता है। कोई कुश्ती में उसे हरा नहीं सकता। यदि आप गो रक्षक हैं तो मुझसे कुश्ती करें। लतूर सिंह जी ने उस पहलवान को कहा कि गो व उसके बछड़े के मांस में वह ताकत नहीं है जो गाय के दूध में है। पहलवान ने इस बात को अस्वीकार किया। दोनों में सहमति न होने पर कुश्ती होना तय हो गया। कुश्ती की शर्तें, नियम व स्थान निश्चित कर लिया गया। यह कुश्ती एक अंग्रेज रैजीडेण्ट अधिकारी जो अंग्रेज सरकार द्वारा रियासतों में नियुक्त होता था, उसकी उपस्थिति व देखरेख में आरम्भ हुई। दोनों पहलवान लड़े। शर्तें पहले से ही तय थीं। लतूर सिंह जी ने मुस्लिम पहलवान को उठाया, उसे चारों ओर घुमाया और अखाड़े से बाहर फेंक दिया। निजाम ने इस घटना से चिढ़ कर लतूर सिंह जी पर अपनी पिस्तौल तान दी। इस पर अंग्रेज अधिकारी ने निजाम को रोका और कहा कि यह सब कुश्ती की शतों व तय नियमों के अनुसार हुआ है। तुम्हारा ऐसा करना अनुचित है। कुश्ती में उपस्थित लोगों ने महर्षि दयानन्द के जयकारे लगाये।

आचार्य श्री इन्द्रजित् देव जी ने इस उदाहरण के आधार पर कहा कि गाय का दूध पीने से गोरक्षा होगी। आर्य विद्वान ने सन् 1965 के गोरक्षा आंदोलन की चर्चा भी की। उन्होंने बताया कि सन् 1966 में दिल्ली में दो दर्जन से अधिक गोभक्तों को देश की केन्द्रीय सरकार ने शहीद कर दिया था। गोरक्षा के समर्थन के कारण ही सन् 1967 के संसदीय चुनावों में भारतीय जनसंघ की लोकसभा में 35 सीटें हो गई थी। आचार्य इन्द्रजित् देव जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द आधुनिक भारत के पहले महापुरुष थे जिन्होंने देशवासियों को गोरक्षा की प्रेरणा की और स्वयं गो हत्या बन्द कराने के लिए ठोस कार्य किये।

आचार्य इन्द्रजित् जी ने कहा कि आजकल गोमाता का दूध छोड़कर भैंस मौसी का दूध पीने वाले लोग गोरक्षा नहीं कर पायेंगे। गो हत्या बन्द करवाने के लिए आचार्यजी ने धार्मिक आधार का सहारा न लेकर आर्थिक आधार पर तथ्य प्रस्तुत करने और गोरक्षा आन्दोलन करने का आह्वान किया। उन्होंने व्यंग में कहा कि गोमाता को नहीं पाता कि देश में गोरक्षा सम्मेलन होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि मैं गोमूत्र का सेवन करता है। इसका सेवन करने से मैं लगभग 80 वर्ष की आयु में भी स्वस्थ हूं। श्री इन्द्रजित् देव ने विनोबा भावे के गोरक्षा आन्दोलन की भी चर्चा की और कहा कि केन्द्र सरकार ने इस गांधीवादी नेता से यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया था कि गोरक्षा केन्द्र का नहीं राज्य का विषय है। इस पर केन्द्र कानून नहीं बना सकता। इसी के साथ गोरक्षा पर श्री इन्द्रजित् देव जी का उपदेश समाप्त हुआ।

इसके बाद डा. रघुवीर वेदालंकार एवं डा. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी के भी व्याख्यान गोरक्षा सम्मेलन में हुए। इनका विवरण हम अपने अगले लेख में देंगे।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून में 2 जून 2017 को गोरक्षा सम्मेलन-**

**“गोरक्षा आन्दोलन को सफल करने के लिए हमें अपनी**

**शक्ति बढ़ानी होगी: डा. रघुवीर वेदालंकार”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आर्ष गुरुकल पौंधा, देहरादून में 2 जून, 2017 को आयोजित गोरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष डा. रघुवीर वेदालंकार ने अपने व्याख्यान में कहा कि तीन बातें हैं जिनके होने से गोरक्षा आन्दोलन सफल हो सकता है। प्रथम यह की राज्य शक्ति गोरक्षा के पक्ष में हो और गोरक्षा विषयक कठोर कानून बनाये। दूसरी बात जनशक्ति व जनसमर्थन की है। उन्होंने कहा कि जनशक्ति के सामने राज्य शक्ति झुकती है। तीसरी बात यह है कि गोरक्षा को व्यवहारिक रूप में अपनाने की है। आचार्य रघुवीर जी ने कहा कि गोमांस का निर्यात बढ़ रहा है। इसमें कमी आनी चाहिये। विद्वान वक्ता ने कहा कि आर्यसमाजी गोरक्षा आन्दोलन करते हैं तो सनातनी भाई हमारा साथ देते हैं। आचार्य जी ने एक पूर्व न्यायाधीश के बयान की चर्चा की जिसने कहा था कि वह गोमांस खाता है और वह गोमांस खाने को अच्छा मानता हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में कैसे गोरक्षा हो सकती है। आचार्य जी ने कहा कि हमें जनशक्ति को जागृत करना व उसे बढ़ाना चाहिये। लेखन द्वारा व मौखिक प्रचार द्वारा गोरक्षा व गोहत्या बन्दी का प्रचार करना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि हम गोरक्षा सम्मेलन करते हैं। यह गोरक्षा आन्दोलन की इतिश्री नहीं है। उन्होंने कहा कि गोरक्षक व गोपालक गोभक्षकों को गोहत्या विषयक साहित्य को दिखायें। आचार्य जी ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि हमारे गांव के हिन्दू लोग कसाईयों को अपनी बूढ़ी गाय व बछड़े तथा अन्य पशु बेचा करते थे। उन्होंने कहा कि हमारे अन्दर यह मिथ्या धारणा आ गई है कि भैंस का दूध अधिक शक्ति देता है। डा. रघुवीर जी ने गाय को राष्ट्रीय पशु के रूप में प्रस्तुत करने व उसे राष्ट्रीय पशु की मान्यता दिलाने की बात कही।

आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि गाय से होने वाले आर्थिक लाभों की चर्चा करें व लोगों को उसका महत्व बतायें। आचार्य जी ने कहा कि हमारी सरकार के सामने वेद का वह महत्व नहीं है जो कि कुरान का है। आचार्य जी ने शाहबानों के केस की चर्चा की और कहा कि प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने संविधान संशोधन कर न्यायालय का फैसला ही बदल दिया था। आचार्य जी ने सरकार द्वारा वेद की अप्रतिष्ठा के उदाहरण भी दिये। उन्होंने कहो कि देश में चारों ओर गोरक्षा की विरोधी शक्तियां खड़ी हैं। गोरक्षा आन्दोलन को सफल करने के लिए हमें अपनी शक्ति बढ़ानी होगी। आचार्य जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री बी.डी. झा के लेख Beef Easting in the Vedas की चर्चा की। उन्होंने कहा कि वह उनके पास गये और उनसे प्रमाण मांगा। उन्होंने बताया कि वह सायण को प्रमाण मानते हैं। आचार्य जी ने कहा कि हमें वेद के लिए बहुत कुछ करना है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज अपने घरों तक ही सीमित हो गया है। शास्त्रार्थ की परम्परा समाप्त हो गई है। उन्होंने कहा कि बिना शास्त्रार्थ के किसी से सत्य बात नहीं मनवाई जा सकती। आचार्य रघुवीर वेदालंकार जी ने दुःख के साथ कहा कि यह देश का दुर्भाग्य है कि देश मांसाहारी हो रहा है। उन्होंने गोमांसाहारियों को गोमांस खाना बन्द करने के लिए समझाने को कहा। उन्होंने कहा कि हम गाय का घी खायें, वह कभी नुकसान नहीं करता। आचार्य जी ने आर्यसमाज को गाय से होने वाले आर्थिक लाभों का प्रचार करने की भी सलाह दी। गाय से जुड़े सभी तथ्यों को हमें प्रचारित करना चाहिये। आचार्य जी ने गोरक्षा को राष्ट्रीय मुद्दा बनाने की सलाह दी। आचार्य जी ने गोमांस भक्षकों को शास्त्रार्थ की चुनौती देने की भी सलाह दी। उन्होंने कहा कि अकबर को गोहत्या बन्द करने संबंधी जन भावनाओं व जनशक्ति के सामने झुकना पड़ा था। हमें देश में गोहत्या के पक्ष में जनशक्ति को बनाना व बढ़ाना होगा। हमें जनशक्ति को बनाकर राज्य शक्ति को झुकाना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि प्रसिद्ध आयुर्वेद के ज्ञाता स्वामी ओमानन्द जी के अनुसार सौ वर्ष पुराने गोधृत को सूंघने से मृगी का रोग ठीक हो जाता है। आचार्य जी ने कहा कि देशी गाय ही असली गाय है। मिक्स गाय गाय नहीं है। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने श्रोताओं को गोरक्षा व गोपालन करने का आह्वान किया।

वेद विदुषी डा. सूर्यादेवी जी ने भी गोरक्षा सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि हमें गोपालन की आवश्यकता पर विचार करना चाहिये। गो पृथिवी, पशु, सूर्य व इसकी रस्मियों को कहते हैं। जो चरती हैं वह गऊ हैं। जो गो को ढूढंने के लिए जाते हैं उनके लिए गवेषणा शब्द का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि वेद को भी गऊ कहते हैं। आचार्या जी ने गो से होने वाले लाभों से संबंधित एक वेदमंत्र का पाठ किया व उसका अर्थ बताया। उन्होंने कहा कि पहले सभी के घरों में गोशाला होती थी। अब लोगों ने घरों में गोशाला रखना छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि यदि हम गोपालन नहीं करेंगे तो गोरक्षा नहीं होगी। यज्ञ अग्निहोत्र करने के लिए हमें गोघृत चाहिये। यदि हम चाहते हैं कि हमारा अग्निहोत्र कभी बन्द न हो तो हमें गोरक्षा करनी ही होगी। आचार्या जी ने स्वास्थ्य विषयक एक रहस्य की बात बताते हुए कहा कि गोमांस खाने वाली माता से उत्पन्न बच्चे के शरीर के अंग तिरछे हो जाते हैं। गोदुग्ध व इससे बने पदार्थों के सेवन से मनुष्य को अनेकानेक लाभ होते हैं और हानि कोई नहीं होती। आचार्या जी ने गोघृत पीने, उसे शरीर पर लगाने व घावों में भी लगाने से होने वाले लाभों को बताया। उन्होंने ‘गो मात्रा न विद्यते’ का उल्लेख कर कहा कि गो से होने वाले लाभों की गणना नहीं की जा सकती। आचार्या सूर्यादेवी जी ने कहा कि गो दुग्ध पीने से अन्न कम खाया जाता है। गोदुग्ध पीने से मनुष्य में मल भी कम बनता है व वह कम दुर्गन्धयुक्त होता है। गोदुग्ध पीने से मल कम बनने से प्रदुषण कम होता है तथा रोग नहीं होते। इसके साथ ही डा. सूर्यादेवी जी का व्याख्यान समाप्त हो गया।

गुरुकुल के पूर्व ब्रह्मचारी आचार्य डा. रवीन्द्र कुमार ने गोरक्षा सम्मेलन का कुशल संचालन किया। सायंकालीन सन्ध्या और शान्ति पाठ के साथ गोरक्षा सम्मेलन का सत्र समाप्त हुआ।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-गुरुकुल पौंधा देहरादून में परिवार निर्माण सम्मेलन-**

**“यदि तुम्हें जीवित रहना है तो यज्ञ करोः स्वामी चित्तेश्वरानन्द”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून का तीन दिवसीय 18वां वार्षिकोत्सव 2 से 4 जून 2017 तक आयोजित किया गया। उत्सव के दूसरे दिन 3 जून, 2017 को परिवार निर्माण सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसे आर्यजगत के अनेक प्रमुख विद्वानों ने सम्बोधित किया। प्रातःकाल सामवेद पारायण यज्ञ हुआ और उसके बाद भजन हुए। मंच पर स्वामी प्रणवाननन्द सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिए जी, डा. रघुवीर वेदालंकार जी, डा. सूर्यादेवी जी, पं. सत्यपाल पथिक जी, पं. इन्द्रजित् देव जी, डा. यज्ञवीर जी, मामचन्द जी आदि उपस्थित थे। प्रथम व्याख्यान स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी का हुआ।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने कहा कि यज्ञ न करने से पाप लगता है। इसको स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने जीवन को सुगमता से चलाने के लिए अन्न, भोजन, जल आदि पदार्थों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि मनुष्यों को जल से अधिक वायु की आवश्यकता होती है। वायु के बिना मनुष्य 3 मिनट भी जीवित नहीं रह सकता। हम सब श्वास छोड़ते हैं तो कार्बन डाइआक्साइड गैस निकाल कर वायु को दूषित करते रहते हैं। शरीर से मल मूल आदि अन्य जो पदार्थ निकलते हैं वह भी वायु में बिगाड़ पैदा करते हैं। स्वामी जी ने कहा कि प्राचीन काल में सभी गृहस्थ मनुष्य यज्ञ किया करते थे। उन्होंने श्रोताओं से कहा कि यदि तुम्हें जिन्दा रहना है तो यज्ञ करो। यदि आपको अधिक पुण्य करना है तो अधिक यज्ञ करना होगा। यज्ञ करने से परिवार व समाज में सुखों का विस्तार होता है। हमें व दूसरों को भी यज्ञ से सुख मिलता है। हम यदि दूसरों को सुख बाटेंगे तो हमें भी सुख मिलेगा। यदि हम व आप यज्ञ करेंगे तो डाक्टर का बिल कम हो जायेगा। जो भाई व बहिनें यज्ञ नहीं करते उन्हें भी यहां यज्ञ करने का संकल्प लेना चाहिये।

 हम विगत अनेक वर्षों से स्वामी जी को चतुर्वेद पारायण व किसी एक वेद का पारायण यज्ञ करते-कराते हुए देख रहे हैं। आपने ऐसे यज्ञ भी किये हैं जिसमें करोड़ों आहुतियां दी र्गइं। स्वामी जी यज्ञ कराते हुए घृत की गुणवत्ता पर भी ध्यान देते हैं। गोघृत का उपयोग ही आप यज्ञों में करते हैं। यज्ञ सामग्री भी विशेष आदेश देकर बनवाते हैं। तपोवन में भी प्रत्येक वर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराते हैं। लाखों व करोड़ों रूपया यज्ञ में व्यय कर चुकें हैं। यज्ञों के प्रति आपमें जो प्रेम, श्रद्धा व उत्साह है वैसा प्रेम व उत्साह अन्यों में दिखाई नहीं देता। अतः स्वामी जी यज्ञ के विषय में यदि कुछ कहते हैं तो वह उनके अपने अनुभवों पर आधारित होता है। हमें स्वामी जी की बातों व उनके एक एक शब्द को महत्व देना चाहिये। यदि ऐसा करेंगे तो हमें लाभ होगा, ऐसा हम अनुभव करते हैं। स्वामी जी का संक्षिप्त उद्बोधन इसी के साथ समाप्त हो गया था। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**“स्वामी आचार्य देवव्रत और आर्ष गुरुकुल पौंधा**

**में चल रहा सार्वदेशिक आर्य वीर दल का शिविर”**

आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान, आचार्य, संन्यासी, स्वामी डा. देवव्रत जी आजकल देहरादून के आर्ष गुरुकुल पौंधा में विराजमान हैं। आप ऋषि भक्त वैदिक विद्वान है। आपने धनुर्वेद पर शोध किया और सन् 1977 में पी.एच-डी. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद अनेक विद्वान इसी विषय पर शोध करके और आपके शोध की सहायता लेकर डाक्टरेट की उपधियां प्राप्त कर चुके हैं। आप एक अच्छे प्रभावशाली वक्ता भी हैं। वेद का आपने गहन अध्ययन व मनन किया है। आप वैदिक विषयों पर अनेक ग्रन्थों का लेखन कर चुके हैं जिससे समाज के युवा और इतर जन लाभान्वित हो रहे हैं। आपका जीवन त्याग व तपस्या का उदाहरण है। कठिन अनुशासन में रहते हैं और आर्य वीर दल के युवाओं को भी कठिन अनुशासन में रखते हैं। विद्वानों का आप आदर करते हैं। आज जब हम आपसे मिले तो हमसे स्वामी जी बहुत प्रेम से मिले जिससे हमारी आत्मा व मन प्रसन्न व प्रफुल्लित हुए। आपने अपना समस्त जीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए व्यतीत किया और ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास लिया है। कितनी कठोर साधना आपको करनी पड़ी है इसका शायद हम अनुमान भी नहीं लगा सकते। आर्य समाज के आप गौरव हैं। आप जैसे विद्वान संन्यासियों के द्वारा ही ऋषि दयानन्द की आर्यसमाज रूपी वाटिका हरी भरी है। हम आशा करते हैं कि आप जो अहर्निश पुरुषार्थ और तप करके युवाओं को संस्कारित कर रहे हैं उससे देश और आर्यसमाज लाभान्वित होंगे और भविष्य में होने वाली वेद क्रान्ति में आपके पुरुषार्थ की भी प्रमुख भूमिका होगी। पंतजलि योगपीठ के स्वामी रामदेव जी से भी आप निकट रूप से जुड़े हुए हैं। आपके अनेक प्रवचन स्वामी रामदेव जी ने अपने चैनलों पर प्रसारित किये हैं। आप सम्पूर्ण आर्यजगत के पूज्य हैं। हम आपके स्वस्थ एवं दीर्घजीवन की कामना करते हैं।

इन दिनों गुरुकुल में सार्वदेशिक आर्य वीर दल का एक शिविर कर रहा है जिसमें देश भर से लगभग 350 युवा अनेक श्रेणी में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कल गुरुकुल में नये ब्रह्मचारियों की एक प्रवेश परीक्षा भी सम्पन्न हुई। इस परीक्षा में 83 प्रवेशाथिर्यों ने भाग लिया। दो प्रश्न पत्र हुए। इन लगभग 100 प्रवेशार्थियों को भी 5 जून, 2017 से गुरुकुल में रखकर परीक्षा विषयक सभी विषयों की जानकारी दी गई थी। इन प्रवेशार्थियों को गुरुकुल देहरादून सहित संस्था के अन्य गुरुकुलों में रखा जायेगा।

आज हमने गुरुकुल में चल रहे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिविर को देखा। शिविर के विषय में विस्तृत जानकारी भी प्राप्त की। प्रशिक्षणार्थियों की सभी कक्षाओं में भी गये। सभी कक्षाओं में प्रशिक्षणार्थियों को अपने अध्ययन में व्यस्त पाया। हससे संबंधित रिर्पोट हम अलग से प्रस्तुत करेंगे। इस समय हम स्वामी देवव्रत जी का एक चित्र, गुरुकुल के आचार्य डा. यज्ञवीर जी और डा. धनंजय जी सहित कुछ चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं। हम अनुभ्ज्ञव करते हैं कि यदि कोई व्यक्ति इस शिविर में भाग ले या इसे पूरा देख ले तो उसकी निराशा दूर हो सकती है। आर्यसमाज में अच्छा काम हो रहा है परन्तु उसका उचित रीति से प्रचार नहीं होता। संगठन को भी सुदृण करने की आवश्यकता है। संगठन में अच्छे व बुरे लोग विद्यमान है। कुछ ऐसे हैं जो पदों को प्राप्त करना ही अपना लक्ष्य मान बैठे हैं। हमें समाज व संगठन में सच्चे ऋषिभक्तों व अच्छे लोगों की संख्या बढ़ाकर आर्यसमाज के संगठन को तेजस्वी व ओजस्वी रूप देना है। हमारी पत्र पत्रिकायें भी कुछ लेखों तक सीमित हैं व सीमित जानकारियां ही प्रस्तुत करती हैं। बहुत सी महत्ववपूर्ण जानकारियां समाज के सम्मुख नहीं आ पाती। समाचार पत्रों की भांति हमारी पत्र-पत्रिकाओं की पहुंच हमारे सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों तक नहीं हो पाती अतः उनका प्रकाशन उनमें नहीं हो पाता। हम क्षमा पूर्वक कहना चाहते हैं कि यह बातें हमनें आलोचना के लिए नहीं अपितु यथार्थ स्थिति जो हम अनुभव करते हैं, उसके आधार पर लिखी है। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के शिविर के विस्तृत समाचार हम अपने आगामी लेख में प्रस्तुत करेंगे। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

 **ओ३म्**

**‘देहरादून का आर्ष गुरुकुल पौंधा और इसके आचार्य द्वय**

**डा. धनंजय जी एवं डा. यज्ञवीर जी’**

**-मनमोहन कुमार आर्य**

हमें आज आर्ष गुरुकल पौंधा जाने का अवसर मिला। उद्देश्य था वहां 5 जून, 2017 से चल रहे 15 दिवसीय सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिविर को देखना। हम लगभग दिन के 10.20 बजे गुरुकुल पहुंचे।

पहले हमें वहां गुरुकुल के आचार्य डा. यज्ञवीर जी के दर्शन हो गये। वह हमें पत्रकार जी कह कर सम्मान देते हैं। वह स्वामी देवव्रत सरस्वती जी को हमारे बारे में सूचित करने चले गये। हम उनसे मिल कर कार्यालय वा आचार्य डा. धनंजय जी के निवास की कुटिया में पहुंचे। वहां आचार्य धनंजय जी और गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक ब्रह्मचारी श्री शिवदेव आर्य जी अपने रिकार्ड को सुव्यवस्थित कर रहे थे। उनसे हमें शिविर के बारे में अनेक जानकारियां मिली। कल दिनांक 12 जून, 2017 को गुरुकुल में प्रवेश हेतु एक परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसमें 83 बच्चों ने भाग लिया था। उनके बारे में विस्तृत जानकारी मिली। उनके प्रश्न पत्र व उत्तर पुस्तिकाओं को देखने का अवसर भी हमें मिला। यहां एक अच्छी बात यह की गई थी कि इन सभी 83 बच्चों को गुरुकुल में 5 जून से 11 जून, 2017 तक 7 दिनों में आर्यसमाज व परीक्षा में पूछे जाने वाले संभावित प्रश्नों की तैयारी करा दी गई थी। बच्चों ने बहुत अच्छे उत्तर दिये। गुरुकुल पौंधा में लगभग 15 बच्चों को ही प्रवेश दिया जा सकेगा। अन्य बच्चे गुरुकुल की केन्द्रीय संस्था गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के अन्य गुरुकुलों में भेजे जायेंगे, ऐसा हमें बताया गया। इसके बाद आर्य वीर दल शिविर के कुछ शिक्षकों से हमारा परिचय कराया गया। हम सभी कक्षाओं में गये और प्रत्यक्ष रूप से वहां के अध्ययन कार्य को देखा। स्वामी देवव्रत जी से भी मिले जिसका कुछ विवरण हम दे चुके हैं।

हम इस समय यहां गुरुकुल के आचार्य डा. धनंजय और आचार्य डा. यज्ञवीर जी का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं। डा. धनंजय जी गुरुकुल गौतम नगर के स्नातक हैं। आप महाराष्ट्र के भण्डारा जिले के रहने वाले हैं। आपके पिता व परिवार के सदस्य ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रति गहरी निष्ठा रखते है। सन् 2000 में ब्रह्मचारी धनंजय जी नये आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून के आचार्य बनाये गये थे। जून, 2000 में ही इस नये गुरुकुल की स्थापना हुई थी। कुछ झोपड़िया बनाकर व अस्थाई झोपड़ीनुमा यज्ञशाला में आचार्य भीमसेन वेदवागीश के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ करके गुरुकुल स्थापित किया गया था। हम भी गुरुकुल के स्थापना स्मारोह व शिलान्यास आदि के आयोजन में सम्मिलित हुए थे। स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा हमें भी शिलान्यास करने का सौभाग्य मिला था। धीरे धीरे आचार्य धनंजय जी के कठोर तप से यह गुरुकुल शैक्षिक व भौतिक दृष्टि से प्रगति करने लगा। भवनों के निर्माण कार्य आरम्भ हो गये और आज 17 वर्ष बाद गुरुकुल के पास एक अनेक बडे भवन एवं सुन्दर परिसर है जहां सहस्रों गुरुकुल प्रेमियों के लिए उत्सव के अवसर पर निवास की व्यवस्था की जाती है और अन्य दिवसों में यहां एक सौ से अधिक ब्रह्मचारी व स्टाफ के अन्य लोग शिक्षा ग्रहण करते हैं। गुरुकुल ने न केवल नगर में ही, अपितु राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याती प्राप्त की है। अब तक यहां अनेक बच्चे स्नातक बन चुके हैं। अनेकों ने नैट परीक्षा उत्तीर्ण की हैं तथा अनेक ब्रह्मचारियों ने पी.एच.डी. की उपाधियां भी प्राप्त की हैं। आचार्य धनंजय जी ने भी इस गुरुकुल में रहकर ही गढ़वाल विश्वविद्यालय से पी.एच-डी. की शोध उपाधि प्राप्त की है। आपका विषय अथर्ववेद में चिकित्सा विषयक वेद मंत्रों पर अनुसंधान व शोध करना था। आज गुरुकुल की यह प्रसिद्धि है कि यहां आर्यजगत के सभी बड़े बड़े विद्वान सहर्ष पधारते रहे हैं। हमने यहां जिन विद्वानों को देखा है उनमें से कुछ हैं डा. धर्मवीर जी, डा. रघुवीर वेदालंकार, पं. वेदेप्रकाश श्रोत्रिय जी, डा. सोमदेव शास्त्री, पं. धर्मपाल शास्त्री, पं. इन्द्रजित् देव जी, स्वामी डा. देवव्रत सरस्वती जी, स्वामी अमृतानन्द जी, स्वामी रुदवेश जी, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी, भजनोपदेशक वेगराज जी, पं. सत्यपाल पथिक जी, श्री ओम् प्रकाश वर्मा जी, श्री सत्यपाल सरल जी, श्री मामराज जी आदि। इसके अतिरिक्त राजनेता और प्रसिद्ध समाजिक हस्तियां भी यहां आयी हैं जिनमें उत्तराखण्ड के राज्यपाल श्री कुरैशी, संस्कृत विश्व विद्यालय के कुलपति डा. महावीर जी और डा. पीयूष कान्त दीक्षित, शिक्षा सचिव महोदय, आचार्य बाल कृष्ण जी आदि। एम.डी.एच. के स्वामी महाशय धर्मपाल जी भी यहां एकाधिक बार आ चुके हैं। अनेक विधायक एवं अन्य नेतागण भी यहां आते रहते हैं और गुरुकुल के कार्यों में सहयोग भी करते हैं। आचार्य धनंजय जी भी देश विदेश में सभी प्रमुख आर्य विद्वानों व नेताओं से सुपरिचित हैं। आपने अनेक देशों की यात्रायें भी की हैं। हमें भी तीन वर्ष पहले आपके साथ ऋषि जन्म भूमि टंकारा जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। गुरुकुल गौतमनगर तो हम प्रायः हर वर्ष जाते हैं। इस यात्रा में अधिकांशतः आचार्य धनंजय जी हमारे साथ रहे हैं। गुरुकुल में बच्चों को शिक्षा के साथ साथ शारीरिक व्यायाम व इससे जुड़ी क्रीडाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। बच्चे इन सभी कार्यों में निपुण है। आचार्य धनंजय जी देहरादून जिले व इसके सभी गांवों में रहने वाले प्रत्येक आर्यसमाजी परिवार को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। समय समय पर उनके घरों पर जाकर उनसे मिलते भी रहते हैं और उनके सुख दुख भी बांटते हैं। हमें देहरादून में विगत 45 वर्षों में ऐसा कोई आर्य विद्वान व कार्यकर्ता दिखाई नहीं दिया जैसे हमारे आचार्य धनंजय जी हैं। आपका व्यवहार इतना मृदु व सम्मानजनक होता है कि एक बार मिलने पर कोई आपसे दूर व पृथक रह ही नहीं सकता।

 डा. यज्ञवीर जी विगत अनेक वर्षों से गुरुकुल को अपनी अध्यापन कार्य की निःशुल्क सेवायें दे रहे हैं। आप दिल्ली के निकटवर्ती एक विद्यालय के सेवानिवृत प्राचार्य हैं। आप सभी ब्रह्मचारियों के शिक्षक हैं। व्याकरण पर आपका असाधारण अधिकार है। आप संस्कृत में काव्य रचना में भी निपुण हैं। इस वर्ष गुरुकुल के उत्सव पर डा. सूर्यादेवी जी और आचार्य बालकृष्ण जी का सम्मान किया गया। उन पर आपने संस्कृत में वृहद कवितायें वा गीत लिखे जिन्हें ब्रह्मचारियों ने गाकर प्रस्तुत किया। यह ऐसा अवसर था कि जिसकी स्मृति श्रोताओं को बहुत दिनों तक बनी रहेगी। आचार्य यज्ञवीर जी का स्वभाव व व्यवहार भी प्रशंसनीय है। आप जहां शीर्ष विद्वान हैं वहीं आप में विनम्रता एवं दूसरों के प्रति स्नेह का भाव भी प्रशंसनीय है। आप गुरुकुल झज्जर के स्नातक हैं। डा. रघुवीर जी, डा. धर्मवीर जी, अजमेर और स्वामी प्रणवानन्द जी आदि आपके सहपाठी रहे हैं। आप गुरुकुल में होने वाले वेद पारायण यज्ञों के अध्यक्ष बनाये जाते हैं। यज्ञों के बीच में वेद मंत्रों की भावपूर्ण व्याख्यायें भी आप करते हैं। हमें विगत वर्ष आपके साथ गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के उत्सव में जाने का अवसर मिला और आपके साथ वहां पर रहे। हमने आपसे अनेक संस्करण इस रेलयात्रा में सुने। दुबारा अवसर मिला तो हम आपके संस्करणों को नोट करेंगे जिससे हम उनके संस्मरणों को सभी मित्रों से साझा कर सके। हमारा सौभाग्य है कि इतने बड़े विद्वान से हमें स्नेह प्राप्त होता है। हम उनके आभारी हैं और उनके अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना करते हैं। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**